

सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल

९वीं एवेन्यू, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज, दिल्ली – ११००९२

सत्र: 2025-26

कक्षा:-7

विषय: हिंदी पाठ्यपुस्तक

पाठ:8

मौखिक कौशल

1. यह कविता सरिता के जल से संबंधित है।
2. इस कविता में गंगा, यमुना तथा सरयू नदियों के नाम आए हैं।
3. इस कविता के रचयिता गोपाल सिंह 'नेपाली' हैं।

लिखित कौशल

1. (क) तन, सरिता (ख) शीतल, अविरल
2. (क) नदी का जल निरंतर बहता रहता है। उसका कोई निश्चित रास्ता नहीं है। लहरें बिना थके, बिना रुके उठती- गिरती रहती हैं ,इसलिए नदी को तन का चंचल और मन का विह्वल कहा गया है।
(ख) कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि जल की तेज धार न जाने कितनी ही बाधाओं को पार करके आगे बढ़ती जाती है। वह बार-बार उठती है गिरती है मगर हार नहीं मानती।
3. (क) सरिता का बहता हुआ जल पेड़ों की जड़ों को सींचते हुए, जल की छोटी- छोटी धाराओं से आलिंगन करते हुए, जल कुंडों में नृत्य करते हुए, अपना विविध रूप परिवर्तन करते हुए आगे बढ़ता जाता है।
(ख) हिमखंडों के पिघलने से निर्मित जल धरती तक आते-आते निर्मल हो गया है। इसे पीकर बेचैन पथिक आराम पाता है। प्रतिदिन बहता हुआ भी सरिता का जल शीतल बना हुआ है।

(ग) भारतमाता का धरातल (हृदय) बहुत कोमल, जीवन रक्षक और स्नेह देने वाला है। इसका शीतल जल तृप्त करने वाला है। इसकी नदियों का जल लगातार युगों-युगों से बहता रहता है।

मूल्यपरक प्रश्न

1. इस कविता से यह संदेश मिलता है कि हमें नदी की भाँति सदैव गतिशील रहना चाहिए। हमें अपना व्यवहार कोमल रखना चाहिए तथा दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहना चाहिए।
2. हमें जरूरतमंद लोगों की मदद करनी चाहिए। जो दूसरों के लिए जीते हैं उन्हीं का जीवन सार्थक माना जाता है। सरिता का बहता हुआ जल परोपकार, दया जैसे मानवीय मूल्यों को उजागर करता है।